STEPPING STONE SCHOOL (HIGH)

CLASS: VIII

Worksheet - VI

Subject: Hindi Language **Date: 24-04-2020**

Topic: Comprehension **Time Limit: 1 hrs**

ईश्वरी एक बड़े ज़मींदार का लड़का था और मैं एक ग़रीब क्लर्क था, जिसके पास मेहनत-मजूरी के सिवा और कोई जायदाद न थी। हम दोनों में परस्पर बहसें होती रहती थीं। मैं ज़मींदार की बुराई करता, उन्हें हिंसक पशु और ख़ून चूसने वाली जोंक और वृक्षों की चोटी पर फूलनेवाला बंझा कहता। वह ज़मींदारों का पक्ष लेता; पर स्वभावत: उसका पहलू कुछ कमज़ोर होता था, क्योंकि उसके पास ज़मींदारों के अनुकूल कोई दलील न थी। यह कहना कि सभी मनुष्य बराबर नहीं होते, छोटे-बड़े हमेशा होते रहते हैं और होते रहेंगे, कमज़ोर दलील थी। किसी मानुषीय या नैतिक नियम से इस व्यवस्था का **औचित्य** सिद्ध करना कठिन था। मैं इस वाद-विवाद की गर्मा-गर्मी में अकसर तेज़ हो जाता और लगनेवाली बातें कह जाता; लेकिन ईश्वरी हारकर भी मुसकराता रहता था। मैंने उसे कभी गर्म होते नहीं देखा। शायद इसका कारण यह था कि वह अपने पक्ष की कमज़ोरी समझता था। नौकरों से वह सीधे मुँह बात न करता था। अमीरों में जो एक बेदर्दी और उद्दंडता होती है, उसका उसे भी **प्रचुर** भाग मिला था। नौकर ने बिस्तर लगाने में ज़रा भी देर की, दूध ज़रूरत से ज़्यादा गर्म या ठंडा हुआ, साइकिल अच्छी तरह साफ़ नहीं हुई, तो वह आपे से बाहर हो जाता। सुस्ती या बदतमीज़ी उसे ज़रा

भी बर्दाश्त न थी, पर दोस्तों से और विशेषकर मुझसे उसका व्यवहार **सौहार्द्र** और नम्रता से भरा होता था। शायद उसकी जगह मैं होता, तो मुझमें भी वही कठोरताएँ पैदा हो जातीं; जो उसमें थीं; क्योंकि मेरा लोक-प्रेम सिद्धान्तों पर नहीं, निजी दशाओं पर टिका हुआ था; लेकिन वह मेरी जगह होकर भी शायद अमीर ही रहता क्योंकि वह प्रकृति से ही विलासी और ऐश्वर्य-प्रिय था।

अबकी दशहरे की छुट्टियों में मैंने निश्चय किया कि घर न जाऊँगा। मेरे पास किराये के लिए रुपये न थे और न मैं घरवालों को तकलीफ़ देना चाहता था। मैं जानता हूँ, वे मुझे जो कुछ देते हैं वह उनकी हैसियत से बहुत ज़्यादा होता है। इसके साथ ही परीक्षा का भी ख़याल था। अभी बहुत-कुछ पढ़ना बाकी था और घर जाकर कौन पढ़ता है। बोर्डिंग हाउस में भूत की तरह अकेले पड़े रहने को भी जी न चाहता था। लेकिन जब ईश्वरी ने मुझे अपने घर चलने का न्यौता दिया, तो मैं बिना आग्रह के राज़ी हो गया। ईश्वरी के साथ परीक्षा की तैयारी ख़ूब हो जाएगी। वह अमीर होकर भी मेहनती और **ज़हीन** है।

उसने इसके साथ ही कहा— लेकिन भाई एक बात का ख़याल रखना। वहाँ अगर ज़मींदारों की निन्दा की तो मामला बिगड़ जाएगा और मेरे घरवालों को बुरा लगेगा। वे लोग तो **असामियों** पर इसी दावे से शासन करते हैं कि ईश्वर ने असामियों को उनकी सेवा के लिए ही पैदा किया है। असामी भी यही समझता है। अगर उसे सुझा दिया जाए कि ज़मींदार और असामी में कोई **मौलिक** भेद नहीं है, तो ज़मींदारी का कहीं पता न लगे।

मैंने कहा— तो क्या तुम समझते हो कि मैं वहाँ जाकर कुछ और हो जाऊँगा?

'हाँ मैं तो यही समझता हूँ।'
तो तुम गलत समझते हो।'
ईश्वरी ने इसका कोई जवाब न दिया। कदाचित उसने इस मामले को मेरे विवेक पर छोड़ दिया और बहुत अच्छा किया। अगर वह अपने बात पर अड़ता, तो मैं भी जिद पकड़ लेता।

दिए गए गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दें:-

प्र- (क) ईश्वरी कौन था तथा वह किसकी पक्ष लेता था?
(ख) ईश्वरी का पहलू कैसा और क्यों होता था?
(ग) वक्ता का कहना क्या था तथा ईश्वरी हारने के बाद क्या करता था?
(घ) अमीरों का कौन सा स्वभाव ईश्वरी में था? वह नौकरों के साथ कैसा व्यवहार करता था?
(ङ) दोस्तों के साथ ईश्वरी का व्यवहार कैसा था?
(च) ईश्वरी और वक्ता के स्वभाव में क्या अंतर था?
(छ) वक्ता ने दशहरे की छुट्टियों में घर न जाने का निश्चय क्यों किया?
(ज) वक्ता दशहरे की छुट्टियों में कहाँ और क्यों गया?
(झ) घर जाने के पहले ईश्वरी ने वक्ता से क्या कहा और क्यों?
(ञ) ईश्वरी ने किस मामले को वक्ता पर छोड़ दिया?